अध्याय 9

विविधता में एकता

विविधता हमारे जीवन का प्रमुख और स्वाभाविक अंग है। हम अच्छे इंसान और नागरिक तभी बन पाएँगे, जब हम समाज की विविधता को समझेंगे और उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे। यही समझ, सम्मान के भाव एवं सहिष्णुता हमारी एकता के मार्ग को प्रशस्त करती है। इस अध्याय में हम विविधता के भिन्न–भिन्न स्वरूपों को भारतीय संदर्भ में जानेंगे और साथ ही यह भी समझेंगे कि विविधता और एकता दोनों आपस में कैसे जुड़े हुए हैं।

दुनिया में विविधता क्यों ?

हमें पता है कि हमारी धरती सब तरफ एक जैसी नहीं है। पृथ्वी पर किसी स्थान पर ऊँची पर्वत श्रृंखलाएँ हैं, कहीं पठार हैं, तो कहीं समतल मैदान। कहीं कल–कल करती नदियाँ है, तो कहीं सूखे रेगिस्तान। कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ बादल खूब बरसते हैं, तो किसी स्थान पर बरसात के नाम पर बादल आँख–मिचौली खेल जाते हैं। कहीं इतनी गर्मी पड़ती है कि हल्के कपड़े पहनने पड़ते हैं, तो कहीं इतनी ठण्ड होती है कि हम अगर सामान्य कपड़े ही पहनें, तो हमारी कँप–कँपी छूट जाए। आप पृथ्वी के जिस भू–भाग पर रहते हैं, वह तो इन विविध पर्यावरणों का बस एक छोटा–सा हिस्सा मात्र है।

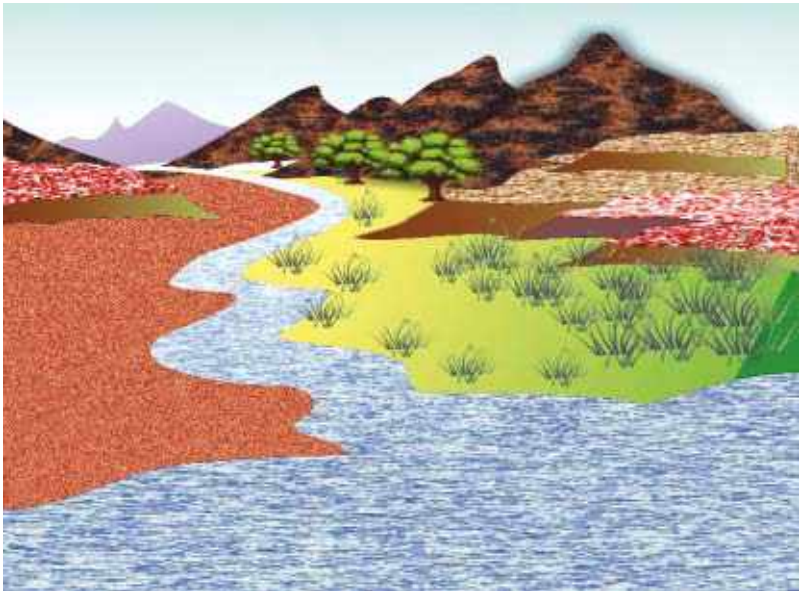

भौगोलिक विविधता

धरातलीय व जलवायु संबंधी विविधताओं के कारण पृथ्वी पर सभी जगह पेड़–पौधे और फसलें एक जैसी पैदा न होकर, अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग तरह की पैदा होती हैं। उदाहरण के लिए हमारे देश के पंजाब राज्य में गेंहूँ और चावल पैदा होते हैं, लेकिन चाय पैदा नहीं होती। चाय की पैदावार के अनुकूल स्थितियाँ देश के एक दूसरे राज्य आसाम में हैं। केरल और तमिलनाडु के समुद्र तटीय क्षेत्र में नारियल खूब पैदा होते हैं, किन्तु नारियल रेगिस्तानी राज्य राजस्थान में पैदा नहीं हो पाता। राजस्थान में बाजरा व मक्का पैदा होते हैं। लोहा, कोयला, तांबा आदि खनिज पदार्थ पृथ्वी पर न तो सभी जगह पाए जाते हैं और न ही समान मात्रा में।

इन सभी विविधताओं के विद्यमान होने के कारण विभिन्न क्षेत्रों के लोगों में खान–पान, पहनावा, रहन–सहन, रोजगार–व्यवसाय आदि में भारी अन्तर आ जाता है।

अब हम हमारे देश भारत में विद्यमान विविधताओं की चर्चा करेंगे –

विविधताओं का धनी भारत देश

भारत में विविधता के कई पक्ष हैं, जैसे– नृजातीयता, भाषा, रंगरूप, शरीर की बनावट, काम करने के तरीके, पूजा–पद्धतियाँ, जाति, कला और संस्कृति आदि। देश में सैकड़ों समुदाय हैं। यहाँ सैकड़ों बोलियाँ और अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। विश्व का शायद ही कोई ऐसा बड़ा धर्म और पंथ हो जो भारत में प्रचलित नहीं हो। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी आदि अनेक धर्मों एवं पंथों को मानने वाले लोग हमारे देश में निवास करते हैं। देश के हर इलाके में वहाँ की अपनी लोककथाएँ, लोकगीत एवं नृत्य मिलते हैं, जिनका संबंध मौसम और फसल बोने या काटने के अवसरों के साथ जुड़ा हुआ है। असम में बीहू, केरल में ओणम, तमिलनाडु में पोंगल, राजस्थान में गणगौर और तीज, बिहार में छठपूजा, पंजाब में बैसाखी आदि त्योहार मनाए जाते हैं। हर धर्म के अपने–अपने त्योहार हैं। भारत में दीपावली, होली, दुर्गापूजा, महावीर जंयती, ईद, क्रिसमस, गुरुनानक–जयंती, नवरात्रि आदि त्योहार बड़े धूमधाम से मनाये जाते हैं।

सांस्कृतिक विविधता

पहनावे की विविधता

गतिविधि :

10 रुपये के नोट पर कुल कितनी भाषाएँ अंकित हैं– उन भाषाओं के नाम तथा वे जहाँ बोली जाती हैं, उन राज्यों की सूची बनाइए।

देश की भौगोलिक विविधताओं को देखें तो उत्तर में हिमालय के ऊँचे पहाड़ और गंगा–यमुना का उपजाऊ मैदान है, दक्षिण में पठार और समुद्र हैं, तो पश्चिम में रेगिस्तान है। भारत में कुछ भाग ऐसे हैं, जहाँ बारह महिनों बर्फ जमी रहती है। देश में गर्मी, सर्दी और बरसात के अलग–अलग मौसम होते हैं। भारत के अलग–अलग भागों में खान–पान भी अलग–अलग हैं। उदाहरण के लिए दक्षिण में इड़ली–ड़ोसा, राजस्थान में दाल–बाटी–चूरमा, गुजरात में ढोकला–खमण, पंजाब में मक्की की रोटी और सरसों का साग और बिहार में लिट्टी चोखा प्रचलित हैं। एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र के वस्त्रों और पहनावे की शैली में भी अन्तर है।

भारतीय उप महाद्वीप की भौगोलिक विविधता व उसकी एकता

अब हम उन कारकों की चर्चा करेंगे जो भारत में विविधता में एकता को स्थापित करते हैं–

भारत की राष्ट्रीय एकता के कारक

विविधता ने हमारी संस्कृति एवं सभ्यता को समृद्ध ही किया है। 'विविधता में एकता' हमारे देश की विशेषता है, जिसकी सराहना पूरी दुनिया में की जाती है। भारत में ऐसे अनेक कारक हैं, जो हमारे देश को एकता के सूत्र में पिरो कर रखते हैं।

1. भौगोलिक बनावट :– सबसे पहले तो भारत की भौगोलिक बनावट इसे एकीकृत रखती है। उत्तर और उत्तर–पूर्व में हिमालय पर्वत, पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर और दक्षिण में हिन्द महासागर हमें एक खास पहचान देते हैं। देश के अन्दर लम्बी नदियाँ एक भाग को दूसरे भाग से जोड़ती हैं।

2. हमारा स्वतंत्रता संग्राम :– ऐतिहासिक रूप से अनेक चक्रवर्ती राजाओं और बादशाहों ने देश को एकता के सूत्र में बाँधकर रखा था। जब अंग्रेजों का भारत पर राज था तो भारत के सभी धर्म, भाषा और क्षेत्र की महिलाओं और पुरुषों ने अंग्रेजों के खिलाफ एकजुट होकर लड़ाई लड़ी थी। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उभरे गीत और चिह्न विविधता के प्रति हमारा विश्वास बनाए रखते हैं।

3. हमारा संविधान :– संपूर्ण भारत के लिए एक ही संविधान है। पूरे देश के लिए समान नियम–कानून और एक ही नागरिकता है। हमारा संविधान राष्ट्रीय एकता को बढ़ाता है। हमारे राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न राष्ट्र–गान और राष्ट्र–गीत भी देश को एकता के सूत्र में पिरोते हैं।

हमारे राष्ट्रीय प्रतीक

1. राष्ट्रीय ध्वज : तिरंगा
2. राष्ट्रीय चिह्न : अशोक स्तम्भ
3. राष्ट्रीय पशु : बाघ
4. राष्ट्रीय पक्षी : मोर
5. राष्ट्रीय पुष्प : कमल
6. राष्ट्रीय खेल : हॉकी
7. राष्ट्र–गान : जन–गण–मन
8. राष्ट्र–गीत : वंदे मातरम्

गतिविधि :
भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों के चित्र बनाकर कक्षा–कक्ष में प्रदर्शित कीजिए।

भारतीय मुद्रा : रुपया

4. सांस्कृतिक एकता :– हमारे देश में सांस्कृतिक दृष्टि से सभी लोग भावनाओं के आधार पर एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। हमने सांस्कृतिक विविधता को अपना लिया है। अपने क्षेत्र के खान–पान, नृत्य–गीत, त्योंहार, वस्त्र–आभूषण आदि के साथ–साथ हमने दूसरे क्षेत्रों की भी इन्हीं विशेषताओं को अपना लिया है। सब साथ मिलकर चलते हैं। एक धर्म के त्योहार को मनाने में दूसरे धर्म के लोग उत्साह से सम्मिलित होते हैं।

5. क्षेत्रीय अंतः निर्भरता :– देश का हर क्षेत्र अपने यहाँ उत्पन्न वस्तु से देश के दूसरे क्षेत्र की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है एवं अनेक आवश्यकताओं के लिए स्वयं भी अन्य क्षेत्रों पर निर्भर है। हमारे बाजार, कल–कारखाने, संचार, परिवहन और यातायत के साधन हमारी आवश्यकताओं को अन्तर्निर्भरता में परिवर्तित करते हैं।

इस प्रकार विविधता ने भारत को दुनिया में विविध फूलों वाले एक सुन्दर और अनोखे गुलदस्ते के रूप में सजा रखा है।

बच्चो ! अब हम भारत के ग्रामीण एवं शहरी जीवन की चर्चा करेंगे–

ग्रामीण एवं शहरी जीवन

ग्रामीण एवं शहरी जीवन में बहुत–सा अन्तर विद्यमान है। भारतीय ग्रामीण क्षेत्र की बात करें तो यहाँ पड़ोस के लोगों में परस्पर घनिष्ठता अधिक होती है और वे एक–दूसरे के सुख–दुख में अधिक निकटता से सम्मिलित होते हैं। गाँवों में खुलापन और हरियाली होती है। दूसरी ओर गाँवों में बिजली, पानी, शिक्षा,

ग्रामीण जीवन

चिकित्सा, यातायात, मनोरंजन आदि की सुविधाएँ शहरों जैसी नहीं हैं। गाँवों में अधिकांश लोग खेती, पशुपालन और उनसे जुड़े हुए काम–धंधे करते हैं। आजकल अनेक कारणों से अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान कम होता जा रहा है। इस मशीनी युग ने गाँवों के परम्परागत कुटीर उद्योगों को समाप्त कर दिया है। यहाँ बेरोजगारी शहरों से ज्यादा होने के कारण लोग रोजगार एवं बेहतर जीवन के लिए शहरों की ओर पलायन करते हैं। शहरी लोगों का जीवन ग्रामीण जीवन से अलग होता है।

शहरी जीवन

शहरों के लोग अधिक व्यस्त रहते हैं। शहरी जीवन भाग–दौड़ भरा होता है। यहाँ ऊँची–ऊँची इमारतों का जाल और वाहनों की रेलम–पेल रहती है। यहाँ हरियाली और खुलापन बहुत कम रहता है। वाहनों और कारखानों से निकले धुआँ से हवा और वातावरण प्रदूषित रहता है। दूसरी ओर शहरों में रोजगार के बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें योग्यता हासिल करके आगे बढ़ा जा सकता है। यहाँ शिक्षा प्राप्त लोगों को रोजगार मिलने की संभावनाएँ अधिक होती हैं। यही कारण है कि लोग ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन करके शहरों में बसते जा रहे हैं।

कच्ची बस्तियाँ व बहुमंजिला भवन

बढ़ती जनसंख्या ने शहरों को समस्याग्रस्त कर दिया है। शहरों में आकर बसने वाले सभी लोगों को पर्याप्त रोजगार व आवश्यक मूलभूत सुविधाएँ नहीं मिल पाती हैं। अधिकांश लोगों को कम आय में अपना जीवन गुजारना पड़ता है। उन्हें कच्चे और छोटे घरों वाली ऐसी बस्तियों में रहना पड़ता है, जहाँ बिजली, पानी, शिक्षा, चिकित्सा आदि की मूलभूत सुविधाओं का अभाव होता है। इन बस्तियों में चारों ओर गन्दगी होती है। बहुत से लोगों को फुटपाथ पर ही अपना जीवन गुजारना पड़ता है। यहाँ भीड़ में रहकर भी व्यक्ति स्वयं को अकेला अनुभव करता है।

गतिविधि :

अपने गाँव / मोहल्ले में प्राप्त नागरिक सुविधाओं की सूची बनाइए।

शब्दावली

विविधता : कई तरह का होने का भाव जैसे खान–पान, वेश–भूषा, रंग– रूप आदि में अन्तर

नृजातीयता : मनुष्य की प्रजाति आर्य, द्रविड़ आदि सम्बन्धी

भौगोलिक : पृथ्वी के प्राकृतिक स्वरूप संबंधी

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

   (i) भारत के उत्तर में ..... पर्वत और ..... के उपजाऊ मैदान हैं।

   (ii) गाँवों में अधिकांश लोग ..... और ..... से जुड़े हुए काम–धंधे करते हैं।

2. स्तम्भ 'अ' को स्तम्भ 'ब' से सुमेलित कीजिए –

(अ)

	स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(I)	राष्ट्रीय ध्वज	मोर
(ii)	राष्ट्रीय चिह्न	बाघ
(iii)	राष्ट्रीय पशु	तिरंगा
(iv)	राष्ट्रीय पक्षी	अशोक स्तम्भ

(ब)

	स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(I)	राष्ट्रीय खेल	जन–गण–मन
(ii)	राष्ट्र–गान	कमल का फूल
(iii)	राष्ट्र–गीत	हॉकी
(iv)	राष्ट्रीय पुष्प	वंदे मातरम्

(स)

	स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(I)	इडली–डोसा	राजस्थान
(ii)	दाल–बाटी–चूरमा	गुजरात
(iii)	ढोकला–खमण	दक्षिणी भारत
(iv)	मक्की की रोटी और सरसों का साग	बिहार
(v)	लिट्टी चोखा	पंजाब

3. भारत में विविधता के कौन–कौन से पक्ष हैं ?
4. भारत की राष्ट्रीय एकता के कारक कौन–कौन से हैं ?
5. ग्रामीण व शहरी जीवन में क्या अन्तर हैं ?
6. गाँव से शहरों की ओर पलायन रोकने हेतु कोई तीन उपाय बताइए।